- प्रस्तावित वक्तागण -

प्रोफेसर जे.एस. राजपूत
पूर्व निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति, पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रोफेसर हृरिकेश सिंह
कुलपति, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)

प्रोफेसर यू.एस. चौधरी
पूर्व कुलपति एवं प्राध्यापक, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

डॉ. अरविन्द पाण्डेय
प्राध्यापक, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

डॉ. अभिजीत कुमार पाल
प्राध्यापक, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय, कोलकाता

डॉ. रमेश बाबू
प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. एस. के. यादव
सेवानिवृत्त प्राध्यापक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. एस. पी. शुक्ला
प्राध्यापक, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात

डॉ. राजश्री वैष्णव
प्राध्यापक, आर.टी.एम. विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

- बिलासपुर शहर एक परिचय -

बिलासपुर छ.ग. राज्य के 27 जिलों में से एक है। बिलासपुर राज्य की राजधानी रायपुर से लगभग 111 कि.मी. उत्तर मे स्थित है। यह राज्य की न्यायधानी एवं प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। बिलासपुर कृषि के क्षेत्र में चावल की विशेष किस्म (दुबराज, विष्णुभोग) आदि के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हाथकरघा उद्योग से बनी कोसे की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ की स्थानीय संस्कृति में सुआनृत्य, भोजली, राउत नाचा, पोला इत्यादि प्रमुख रुप से मनाए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ऊर्जा के क्षेत्र में बिलासपुर संभाग का देश मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके आसपास के क्षेत्रों में कई विद्युत गृहों में लगभग 10,000 से 15,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ शहर में अनेक स्थल हैं जिसमें विवेकानंद उद्यान, ऊर्जा पार्क, स्मृति वन, यातायात पार्क, बिलासा ताल आदि है। शहर के निकटतम दर्शनीय स्थल रतनपुर महामाया मंदिर, मल्हार, अमरकंटक, कानन पेण्डारी (मिनी जू), तालागाँव और चैतुरगढ़ प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा की दृष्टि से बिलासपुर में राज्य के चार प्रमुख विश्वविद्यालय हैं इसके अतिरिक्त इंजी., चिकित्सा एवं कृषि महाविद्यालय स्थित हैं।

- मुख्य संरक्षक -

प्रो. बंश गोपाल सिंह
मा. कुलपति
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संयोजक -

डॉ. श्रीमती बीना सिंह
डॉ. अनिता सिंह
डॉ. प्रकृति जेम्स

- आयोजन समिति के सदस्य -

डॉ. बी.एल.गोयल
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
डॉ. रुचि त्रिपाठी
डॉ. प्रीतिरानी मिश्रा
श्री संजीव लवानियाँ
श्री रेशमलाल प्रधान
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव
डॉ. पुष्कर दुबे

- पंजीयन एवं अन्य विवरण हेतु संपर्क-सूत्र -

डॉ. बीना सिंह — Mob. : 88390-17319
e-mail : drbeenasingh2013@gmail.com

डॉ. अनिता सिंह — Mob. : 98271-18808
e-mail : 31anitasingh@gmail.com

डॉ. प्रकृति जेम्स — Mob. : 9993450848
e-mail : jamesprakriti@gmail.com

- आवागमन की सुविधा -

छ.ग. राज्य के सभी शहरों को जोड़ने के लिए यहाँ से बस सेवाऐं हैं व बिलासपुर रेल्वे स्टेशन छ.ग. के व्यस्ततम रेल मार्ग में से एक है। दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वे जोन का मुख्यालय बिलासपुर में स्थित है। बिलासपुर का हवाई अड्डा चकरभाठा में स्थित है किन्तु दैनिक हवाई सेवा के लिए निकटतम हवाई अड्डा रायपुर है।

- बिलासपुर आगमन -

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

16-17 फरवरी, 2019

विषय

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता

आयोजक

शिक्षा विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

pssou.ac.in

- विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी सीापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रुप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्यायः परम् तपः' के ध्येय वाक्य के साथ 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 06 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 144 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 71 एकड़ में फैला हुआ है।

- संगोष्ठी के विषय में -

सृजनात्मकता की पहचान चार तत्वों से की जा सकती है प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, विस्तार। यह सृजनशील बालकों में निहित विशिष्ट गुण है, ऐसे बालक स्वतन्त्र निर्णय शक्ति वाले होते है, अपनी बात पर दृढ़ होते है तथा जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान में रुचि लेते है। नवीन संबंधों को जोड़ना एवं उन्हे अभिव्यक्त करना सृजनात्मकता की विशेषता है।

सृजनात्मकता प्रत्येक व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज मे कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य एवं व्यवसाय मे सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में सृजन की संभावनाएँ होती है और निश्चित ही उसका विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान मानव जीवन में अनेक परिवर्तन आ रहे है। प्रत्येक पग पर उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नवीन परिस्थितियों का सामना करने हेतु सृजन की प्रतिभा को विकसित किया जाना चाहिए।

बालको में सृजनात्मकता दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिये उत्साहजनक वातावरण का निर्माण आवश्यक है सृजनात्मकता के विकास में शिक्षा एवं शिक्षक दोनों की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का यह कार्य है कि बालक में निहित सृजनात्मकता को पहचान कर उसके विकास हेतु समुचित व्यवस्था या वातावरण उत्पन्न करें। सृजनात्मकता के विकास हेतु समुचित अवसर प्रदान किए जाएँ, क्योंकि विद्यालय या विद्यालय के बाहर प्राप्त अनुभवों में उत्कृष्ट कोटि की सृजनात्मकता निहित रहती है, उदाहरणस्वरुप किसी बालक की अभिव्यक्ति का माध्यम खेलकूद हो सकता है। जिमनास्टिक का अभ्यास नृत्यकला की आधारशिला बन सकता है। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसकी सृजनात्मकता की प्रवृति की अभिव्यकित हेतु उपयुक्त माध्यम ढूँढने में समुचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक अधिक है और व्यवहारिक कम। ऐसे में विषय वस्तु को याद करने पर अधिक बल दिया जाता है। बालकों में किस प्रकार की सृजनात्मकता गुण है, उसको पहचानना और उस पर आधारित पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि का प्रयोग करना आदि कार्यो का आभाव अभी विद्यालयों में देखने को मिलता है। हालाँकि सृजनात्मकता एक मौलिक गुण है और परिपक्वता के बढ़ने के साथ इसमें भी निखार आता है। कई बार यह भी देखने को मिलता है कि कम पढ़ा लिखा अर्थात् जिसनें औपचारिक शिक्षा न प्राप्त की हो या कम प्राप्त की हो। ऐसे लोग अपने जीवन के अनुभव और अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से ही अपनी सृजनशीलता को विकसित कर लेते हैं। लेकिन विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ पहुँचने वाले प्रत्येक बालक को यह अवसर मिलना ही चाहिए जहाँ वह अपनी सृजनशीलता को पहचाने और विकसित करें।

- संगोष्ठी की विषयवस्तु -

- वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव।
- शिक्षा पद्धति, परिणाम एवं तनाव प्रबंध के संदर्भ में सृजनात्मकता।
- विद्यालय एवं घर में सृजनात्मकता की स्वीकार्यता।
- रचनात्मक कार्यो के लिए संसाधनों / प्रेरणा की उपलब्धता।
- विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता ।
- नंबर आधारित पद्धति के कारण सृजनात्मकता के सीमित अवसर।
- शिक्षालय में नवीन ज्ञान के अनुप्रयोग के अवसर।
- नवीन ज्ञान के अनुप्रयोग हेतु पाठ्यक्रम में स्थान की आवश्यकता तथा अवसर की उपलब्धता।
- शिक्षक छात्र अंतःक्रिया एवं सृजनात्मकता के विकास की सीमा।
- सृजनात्मकता बनाम व्यावहारिकता।
- शिक्षा पद्धति, सृजनात्मकता एवं बाजारवाद।
- अन्य संबंधित विषय।

- विशेष -

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन एवं यातायात की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

- शोध-आलेख सारांश हेतु निर्देश -

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 10 फरवरी, 2019 तक creativitynationalseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश एवं संपूर्ण शोध हेतु फॉन्ट एवं साइज निम्नानुसार भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेज़ी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 10 फरवरी, 2019
- संपूर्ण शोध भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 13 फरवरी, 2019

- पंजीयन-प्रक्रिया -

1. संगोष्ठी में सामान्य छात्र, शिक्षक, सामाजिक संस्थाएँ प्रतिभागी हो सकते है।
2. इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन प्रपत्र, पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक 10 फरवरी, 2019 तक जमा करना अनिवार्य होगा।
3. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'महामाया परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 08 में दिनांक 10 फरवरी, 2019 तक उपलब्ध रहेगी।
4. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल के पंजीयन काऊंटर में दिनांक 16 फरवरी, 2019 को उपलब्ध रहेगी।
5. स्थल पंजीयन कराने वाले प्रतिभागीयों को पंजीयन-किट प्रदान नहीं किया जावेगा। उन्हें केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।
6. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बडौदा खाता में जमा कर सकते है -

   Zero
   MICR - 495012006 IFSC Code: BARB0BIRKON
   खाता क्र. : 58100100001089
   खाता का नाम : "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता"

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	10 फरवरी तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण / अन्य	600 / -	800 / -
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	500 / -	600 / -
3	सामाजिक कार्यकर्ता	600 / -	800 / -

- पंजीयन-पपत्र -

नाम : .....

पदनाम : ..... लिंग : .....

संस्थागत पता : .....

.....

.....

मोबा. : .....

ई-मेल : .....

शोध-पत्र का शीर्षक : .....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हाँ / नहीं : .....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : .....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान).....

रसीद क्र. ..... ड्राफ्ट क्र. ..... चालान क्र. .....

बैंक का नाम : ..... दिनांक : .....

हस्ताक्षर .....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारुप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।